उत्तर प्रदेश की लोक चित्र कला : अयोध्या नगर के विशेष सन्दर्भमें एक अध्ययन

सरिता द्विवेदी,
शोधार्थी,
मोनाड विश्वविद्यालय हापुड

भूमिका

किसी स्थान विशेष की अस्मिता की सही पहचान पाने के लिए न केवल वहां के साहित्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों का आंतरिक परीक्षण भी आवश्यक है, वरन् वहां की लोक कला का मूल्यांकन भी आवश्यक एवं उपयोगी है, क्योंकि मानवीय मूल्यों के मानवीकरण में इनकी भूमिका प्रमुख रही हैं। गुलामी की जंजीरों में बंधे रहने के कारण हमारी कला का प्राचीन स्वरूप विलुप्त हो चुका था, उसको समाज के सम्मुख लाने के लिये ही मुझे "अयोध्या नगरी की लोक चित्रकला" पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मिली। अयोध्या आर्यों की सांस्कृतिक राजधानी रही है, इसे विश्व का प्रथम राज्य केन्द्र होने का गौरव प्राप्त है। अयोध्या की संस्कृति और लोक जीवन, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। अत्यन्त प्राचीन काल से अयोध्या के निवासियों का दैनिक जीवन उनके मनोभाव एवं आदर्श, उनकी लोक कला के माध्यम से अभिव्यक्ति हुये हैं।

लोक मानव की अदभ्य आकांक्षा एवं उसका सांस्कृतिक विलोचन जब नित्य प्रति की जिन्दगी में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों एवं जन–जन के कला नैपुण्य का सहारा पाकर अपने धार्मिक एवं साम्प्रदायिक जीवनानुभवों को सौन्दर्यमय आकार देने का प्रयत्न करता है, तब जिस कला का उदय होता है उसे लोक कला कहते हैं। लोक कला कार्य की साधना किसी सजग इरादे से नहीं, बल्कि सवांश में एक आन्तरिक प्रेरणा होती है। लोक कला के क्षेत्र में यह सर्वमान तथ्य है कि रचनात्मक प्रतिभा प्रत्येक मनुष्य के पास होती है किन्तु उसकी समुचित अभिव्यक्तित्व के लिये उचित अभिप्रेरणा और अनुशासित निर्देशन आवश्यक होता है, इसलिये लोक कला के इतिहास का आरम्भ मनुष्यता के इतिहास के साथ माना गया है तात्पर्य यह है कि मनुष्य की जीविका के साथ उसके रचनात्मक प्रयत्न का सामंजस्य प्रारम्भ से ही शुरू हो गया।इसीलिये लोक कला की अभिव्यक्तियों में जन्म के आश्चर्य, मृत्यु के रहस्य, प्रेम की समाधि दशा और मनुष्य के आव्यीय सम्बन्धों की मधुरमय अभ्युन्नति छिपी रहती है। परन्तु सभ्यता के साथ विकास तथा लोक कलाओं की महत्ता निरन्तर बढ़ती जाती है, जबकि उसकी साधना कठिनतर हो जाती है। लोक कला देश के हर क्षेत्र में अपने क्षेत्र की संस्कृति की कहानी कह रही है। लोक कला जन जीवन का अभिन्न अंग है। साथ ही यह ग्रामीणों के मनोभावों के अतिरिक्त, सौन्दर्य, कलात्मक अभिव्यक्ति, लोक रंजकता आदि को सहज अनुभूति कराती है।

उद्देश्य

रामकथा का विस्तार इतना व्यापक और सार्वभौमिक है कि सर्वत्र राम ही राम विद्यमान दिखाई देते हैं, फिर भी रामकथा कहीं समाप्त होती नहीं दिखाई देती। हम रामकथा को जितना अधिक देखने की कोशिश करते हैं, उतने ही उसके नये–नये आयाम खुलते जाते हैं। बाल्मीकि से लेकर तुलसी तक रामकथा को अपने–अपने

तरीके से विश्लेषित करने की कोशिश की गयी है और उसके पश्चात् लगभग सभी भाषाओं, शैलियों में भी अभिव्यक्ति का प्रयास किया गया, रामकथा को अयोध्या की लोककथा में किस विधा से पिरोया गया है। यह जानने की उत्सुकता ने मुझे "अयोध्या नगरी की लोक चित्रकला" विषय पर शोध कार्य करने के लिये प्रेरित किया। मेरे इस शोध कार्य का उद्देश्य निम्नलिखित है :–

- अयोध्या नगरी की लोक चित्र कला का स्वरूप ज्ञात करना।
- अयोध्या के अनुष्ठानिक लोक चित्र, लोक चित्रों में अलंकारिकता का महत्व व अयोध्या की कौशलार्थ कला का अध्ययन एवं लोगों को उनसे अवगत कराना।
- अयोध्या के प्रमुख पर्वों के लोक चित्रण का आधार ज्ञात करना।
- अयोध्या की लोक चित्रण की पारम्परिक विधियाँ क्या थी, उनकी प्रक्रिया एवं स्वरूप को विश्लेषित करना।
- आधुनिक लोक चित्र कला में परम्परा के अवशेष को ज्ञात करना।
- अन्य स्थानों की लोक कलाओं से अयोध्या की लोक कला में अन्तर।

अनुसंधान प्रणाली

अयोध्या एक धर्म प्राण क्षेत्र है। यहाँ सभी गाँवों, शहरों में आपको मन्दिर अवश्य मिल जायेंगे, जो वस्तुतः हमारी सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के मूल केन्द्र हैं। अतः त्यौहारों पर मन्दिर में भी विशेष पूजा अर्चना की जाती है। इसके लिये मन्दिरों को विशेष रूप से सजाया जाता है, झाकियाँ निकाली जाती है। मूर्ति को उपरोक्त सोलह प्रकारों से पूजा श्रृंगार कर राजसी वस्त्र व नाना प्रकार के आभूषणों, सुन्दर मालाओं से सजाया जाता है और नाना प्रकार के नैवेद्य से भोग लगाये जाते हैं। धार्मिक दृष्टि से देखा जाये तो प्रायः सभी त्यौहार धार्मिक आस्थाओं की उल्लासपूर्ण प्रस्तुति है।अयोध्या एक पौराणिक नगर है। इस पौराणिक नगर ने अनेक झंझावत तथा उलट–पलट देखे हैं तथा उन्हें अपने में आत्मसात किया है। फलस्वरूप यद्यपि यहाँ हर भवन, मन्दिर हैं, तथापि प्रमुख प्राचीन मन्दिरों में वास्तुकला, चित्रकला एवं मूर्तिकला की त्रिवेणी का संगम प्रतीत होता है, जो परिवर्तन के दर्द एवं संस्कृतियों का अनुवादन करते हुए लगते हैं। भित्तियों में देवी–देवताओं, संतों, आश्रमों एवं लोक कथाओं व पर्वों आदि के बहुतायत चित्र मिलते हैं। जिनके कालक्रम व शैली का निर्धारण करना अपने में वृहद् कार्य है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इस विषयवस्तु पर हर सम्भव श्रेष्ठतम प्रयास किया है।इस नगर की लोक कथाओं का दर्शन, विविधताओं से यहाँ के उत्कीर्ण चित्रों में किया जाता है। यह लोक कला आदिम कलाओं से प्रेरित होते हुए समयानुसार परिवर्तन व परिमार्जन स्वीकार किये हैं। अयोध्या की लोक कलायें पर्व विशेष की लोक कथाओं को आधार मानकर चित्रित की जाती है। इस शोध के माध्यम से मैंने लोक कथाओं, लोक कलाओं, लोक मान्यताओं में सामंजस्य स्थापित करने का पूर्ण प्रयाय किया है।अयोध्या की पुरानी मान्यताओं व लोक कलाओं के पीछे के कारणों को जानने हेतु मैंने अयोध्या के बुजुर्गों, महन्थों, पण्डितों आदि से साक्षात्कार किया व लोक कलाओं के पीछे का गूढ़ रहस्य जानने का पूर्ण व सफल प्रयत्न किया।

अयोध्या का वर्णन पुराणों से लेकर बाल्मीकि रामायण तथा तुलसी कृत श्रीरामचरितमानस आदि अनेकों धार्मिक व साहित्यिक ग्रन्थों में किया गया है। प्रस्तुत शोध में उन्हीं के माध्यम से ग्रन्थानुरूप साहित्यिक कलाओं का विहंगम अध्ययन करने का सफल प्रयास किया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "अयोध्या नगरी की लोक चित्रकला" पर आधारित है, जिसमें जनमानस की मनोभावना को कथास्वरूप में स्वीकार करने के साथ–साथ विभिन्न उत्सवों एवं पर्वों के आधार पर प्रचलित कथाओं को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए चित्रों का सहारा लिया गया है।सूर्य वंश में उत्पन्न विभिन्न प्रतापी राजाओं की राजधानी अयोध्या में श्रीराम का उल्लेख न केवल श्रेष्ठतम शासन काल के रूप में प्रख्यात हुआ, अपितु हिन्दू जनमानस में उन्हें साक्षात् भगवान के अवतार के रूप में प्रस्थापित किया गया है। उनका आदर्श जीवन एवं चरित्र लोक जीवन्त के लिए आदर्श स्थापित करता है, जिसके कलात्मक स्वरूप का वर्णन यहाँ की लोक कलाओं को अनुप्राणित किये हुए हैं।

- अयोध्या के पर्व और लोक चित्र के विशिष्ट अध्ययन जो शोध प्रबन्ध के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, से हम अयोध्या की सांस्कृतिक विरासत को प्रत्यक्ष रूप से सुरक्षित व संरक्षित रख सकते हैं। यहाँ पर निर्मित लोक चित्र यहाँ की निगरानियों, संतों की भावनाओं, जीवन आदर्शों तथा जीवन शैली को अभिव्यक्त करते हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दैनिक जीवन में संस्कार युक्त पर्व जो हमारी संस्कृति तथा कथा के रूप में सुरक्षित जनश्रुतियों में अभिव्यक्त करता है वहीं यह चित्रों में दृश्य रूप में प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

- अयोध्या में अनुष्ठानिक व्रत जैसे करवा चौथ, गणेश चतुर्थी आदि जो पति या पुत्र को लम्बी आयु की कामना लेकर किये जाते हैं, वे अनुष्ठानिक व्रत कहते हैं तथा इस व्रत में बनाये जाने वाले लोक चित्र अनुष्ठानिक लोक चित्र कहलाते हैं।इन लोक चित्रों को अलंकृत करने के लिए अलंकरण का भी उपयोग किया जाता है, जो अपने में गूढ़ अर्थ लिये होते हैं, जैसे–लता या बेल जो चित्र को घेरने के लिए बनायी जाती है, जो जीवन की निरन्तरता को व्यक्त करती है। प्रायः कमल का विस्तार एक नाल से होता है, जो वंश वृद्धि की आकांक्षा को दर्शाता है। कमल दल का साथ गुथा होना, एक–दूसरे से ओत–प्रोत होना तथा परस्पर सम्बन्धित होना दर्शाता है। इस प्रकार लोक कला के हर प्रतीक का अपना महत्व व अर्थ होता है।

- ये लोक चित्र जो किसी न किसी कथा पर आधारित होते हैं, हमारे समाज की मानसिकता को व्यक्त करते हैं। इस विशद् अध्ययन से यह तथ्य भी प्रकाशित हुआ कि भारतीय परम्परा पर आधारित इन लोक चित्रों में देवी–देवता, मानव, पशु–पक्षी, सूर्य–चन्द्रमा, तारे, घरेलू, रसोई के बर्तन, केले के पेड़, हाथी, घोड़े, द्वारपाल, ज्यामितिक आकृतियाँ आदि के माध्यम में से इन कथात्मक चित्रों को बनाते समय पर्वों और उनकी कथाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है, जो कि अपने आप एक प्राचीनतम, श्रेष्ठ व विशिष्ट कला का नमूना है। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि कथा को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि जिस संस्कार को लेकर लोक चित्र बनाये जाते हैं, उसकी समस्त भावनाओं और अभिप्राय को भलीभाँति चित्र स्पष्ट करते हैं।

- प्रायः पर्वों पर आधारित लोक चित्र के निर्माण हेतु पूर्वी दीवार का प्रयोग किया जाता है। पर्वों के अनुसार घर के आंगन, मुख्य दरवाजे व पूर्वी दीवार का चुनाव कर उसके धरातल को गेरू व गोबर से पोतकर उस पर घर पर ही उपलब्ध, हल्दी, चावल का आटा, गेरू, सिन्दूर, काजल, गेहूँ का आटा आदि रंगों द्वारा चित्र निर्मित किये जाते हैं। ब्रश के रूप में बाँस की कूची का प्रयोग चित्र बनाने के लिए किया जाता है। पर्वों पर आधारित कथा

का चित्रण लोक चित्र में करके इसका पूजन करने के उपरान्त व्रत पूर्ण किया जाता है।

- आज लोक चित्रण में सामग्री में भले ही कुछ बदलाव आया हो, जैसे–वनस्पतिक रंगों की जगह रासायनिक रंग बाँस की कूची की जगह आधुनिक ब्रश। किन्तु चित्रों को यथावत ही चित्रित किया जाता है। कथा को ही बनाकर ज्यामितिक शैली द्वारा ही तथा पूर्व प्रचलित मानव आकृतियाँ द्वारा ही उसी संस्कार व आदर्श की भावना से ही चित्रित किया जाता है, जिसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इन चित्रों को धर्म व परम्परा से जोड़कर देखा गया जिसके कारण इनमें कोई विशेष परिवर्तन को स्थान नहीं दिया गया।
- अयोध्या में चूँकि सभी प्रान्तों के लोग निवास करते हैं तो हर क्षेत्र की लोक कला का प्रभाव अयोध्या की लोक कला पर दिखता है किन्तु जो विशेष अन्तर अयोध्या की लोक कला का है, जो इसे अन्य स्थानों की लोक कला से अलग करता है। वह यह भी अन्य क्षेत्रों में लोक चित्र बनाने हेतु धरातल को गेरू आदि से रंगा जाता है किन्तु अयोध्या की लोक कला में चूने से पुती दीवार पर सीधे लोक चित्र का चित्रण करते हैं।
- निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि अयोध्या के पर्व और उन पर आधारित चित्र लोक मानस की सहज व स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि जिस ऋतु में जो अनाज उत्पन्न होता, वही उस ऋतु में पड़ने वाले त्यौहार में चढ़ाया जाता है, जो कि भारत के कृषि प्रधान देश होने का मान कराता है और अध्यात्म प्रधान होने के कारण नये अनाज का प्रथम भोग ईश्वर को लगाने की परम्परा को त्यौहारों से जोड़ दिया गया, जो पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाये जाने से हमारी संस्कृति व विरासत बन गये और अपनी संस्कृति व विरासत को संरक्षित रखना हमारा दायित्व है।हमारी लोक कला अपने वास्तविक रूप के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होते हुए भी उसी स्वरूप में हमारे बीच अपनी महत्ता बनाये हुए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

- अर्थशास्त्र (कौटिल्यीय) : वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा संस्कृत विद्याभवन, वाराणसी–1952घुर्ये, जी0एस0 इण्डियन साधु, विद द कोलिव्रेशन ऑफ एल0एन0 चापेकर, बम्बई–1953
- लाल, वी0वी0 वाज अयोध्या ए मिथिकल सिटी, पुरातत्व, भाग–10 दिल्ली–1981
- अग्रवाल, आर0सी0 कृष्ण एण्ड बलराम इन राजस्थान स्कल्पचर्स इण्डियन हिस्टारिकल क्वाटर्नली–30 सं0 4–1954
- सिंह विद्या बिन्दु सिंह उत्तर प्रदेश की लोक कलायें–व्रत एवं त्यौहार, सांस्कृतिक कार्य विभाग उत्तर प्रदेश–1994
- सिंह सरनाम आखेपन देखी अयोध्या, एल VI/एल–17 अलीगंज, लखनऊ–2007
- कंछल बनवारी लाल श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली–2014

Copyright © 2016, Sarita Dwivedi. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.